International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 29-09-2021, Accepted: 15-10-2021, Published: 29-10-2021
Volume 7, Issue 5, 2021, Page No. 122-123

स्त्री विमर्श के संदर्भ में प्रसाद कृत 'ध्रुवस्वामिनी'

अर्चना शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, रामजस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

सारांश
प्रस्तुत शोध–आलेख का ध्येय हिंदी साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षर जयशंकर प्रसाद कृत नाटक "ध्रुवस्वामिनी" में स्त्री विमर्श के प्रासंगिक आयामों को प्रस्तुत करना रहा है । स्त्री विमर्श 21वीं सदी ही नहीं अपितु युगों–युगों से निष्पक्ष दृष्टि एवं सामजिक विमर्श की बाट–जोह रहा है। प्रस्तुत शोध–आलेख के माध्यम से जयशंकर प्रसाद कृत ऐतिहासिक नाटक "ध्रुवस्वामिनी" के प्रमुख नारी पात्र ध्रुवस्वामिनी के माध्यम से स्त्री अस्मिता, सम्मान एवं स्वाभिमान के अनेक पहलुओं को उकेरा गया है । यह प्रस्तुत शोध–आलेख का मुख्य उद्देश्य है।

मूल शब्दः स्त्री, विमर्श, साहित्य, कर्त्तव्य, नाटक, नारी–चेतना, आधुनिकतावाद

प्रस्तावना

जिस प्रकार अधिकार एवं कर्त्तव्य का प्रश्न विचारणीय है। ठीक उसी प्रकार स्त्री विमर्श के संदर्भ में मानसिकता का प्रश्न अनिवार्य होना अवश्यंभावी है। यदि आज हम विचार करें कि आख़िरकार वैचारिक लड़ाई किसके विरुद्ध है, तो इसमें दो आयाम मुखर रूप से प्रकट होते हैं। प्रथम – 'मानसिकता' एवं द्वितीय – 'सामाजिक व्यवस्था'। अक्सर हम इस संदर्भ में मात्र एक ही शब्द को वैचारिक धरातल पर ला पटकते हैं। यह शब्द है – 'पितृसत्तावाद' किंतु विस्मृत कर बैठते हैं कि यह मात्र एक 'लैंगिक वर्ग' का परिचायक मात्र नहीं है अपितु 'मानसिकता' का परिचायक है। यह 'मानसिकता' स्त्री में भी हो सकती है और पुरुष में भी।

छायावादी कविता के प्रकाश स्तंभ एवं प्रमुख हस्ताक्षर जयशंकर प्रसाद वस्तुतः ऐसे 'दिवाकर' हैं; जिन्होंने समस्त हिंदी साहित्य को आलोकित किया है। यदि ऐतिहासिक नाटककार के रूप में प्रसाद के नाटकों को देखें तो 'ध्रुवस्वामिनी' अनेक दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण नाट्य कृति है। प्रसाद नाटक में लिखते हैं –

"भगवान ने स्त्रियों को उत्पन्न करके ही अधिकारों से वंचित नहीं किया है किंतु तुम लोगों की दस्युवृत्ति ने उसे लूटा है।"[1]

दरअसल .... ध्रुवस्वामिनी का आधार इतिहास भले हो पर उसमें नारी चेतना और महत्वपूर्ण सामजिक विमर्श स्त्री–विमर्श की पुख्ता नींव हैं। यह नींव ही साहित्यिक धरा पर स्त्री–अस्मिता एवं अधिकारों के प्रति स्तंभ रूप में डटकर खड़ी रहती है। 'हिंदी नाटक रू समाजशास्त्रीय अध्ययन' में डॉ० सीताराम झा लिखते हैं –

"प्रसाद का साहित्य इसका प्रमाण है कि उन्होंने अपनी परंपरा को जड़ रूप में ग्रहण नहीं किया है। उन्होंने परिवर्तित परिस्थितियों के अनुरूप उसका समायोजन किया है।"[2]

जयशंकर प्रसाद नारी–महिमा के आख्याता कथाकार थे। उन्होंने अपने समय में नारी की दलित, उपेक्षित दशा देखी थी, पुरुषों की दासता की बेड़ियों में जकड़ी हुई नारी की व्यथा का अनुभव किया था। उसकी दशा से नारी को मुक्ति दिलाने के लिए प्रसाद के मन में अकुलाहट थी। इस रूप में उनके हृदय में जो भाव उत्पन्न हुए, वह उन्हें निःसृत करते हैं –

"पुरुषों ने स्त्रियों को अपनी पशु–संपत्ति समझकर उन पर अत्याचार करने का अभ्यास बना लिया है, वह मेरे साथ नहीं चल सकता।"[3]

'ध्रुवस्वामिनी' स्वयं अंतरात्मा से चंद्रगुप्त से प्रेम करते हुए भी सामाजिक– मर्यादा का निर्वाह करती है, किंतु कायर पति रामगुप्त जब उसकी रक्षा से पल्ला झाड़ लेता है, तब उसके समक्ष भविष्य और सतीत्व सहित अस्तित्व की रक्षा की समस्या उपस्थित हो जाती है। उसका शाश्वत् नारीत्व जागृत हो उठता है और जब वह आत्महत्या करने की कोशिश करती है तो उस क्षण में चंद्रगुप्त उसकी रक्षा करने के साथ–साथ शकराज को द्वंद्व–युद्ध में पराजित कर उसकी हत्या कर डालता है।

विजयोपरांत रामगुप्त अपनी परित्यक्ता पत्नी अपना अधिकार जताते हुए प्राप्त उपलब्धि (जीत) में अपना अधिकार लेने शिविर पहुँच जाता है किंतु तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। ध्रुवस्वामिनी में अपने अधिकारों के प्रति आवाज़ बुलंद करने का हौसला जन्म ले लेता है और चंद्रगुप्त को अधिकार और कर्त्तव्य की सही परिभाषा का ज्ञान हो चुका होता है। इस दौरान बहन मंदाकिनी, पुरोहित, प्रजा, सामंतगण, परिषद् और सैनिक वर्ग का भरपूर सहयोग चंद्रगुप्त व ध्रुवस्वामिनी को मिलता है। अंततः ध्रुवस्वामिनी का पुनर्विवाह चंद्रगुप्त के साथ हो जाता है।

यदि दृष्टि को स्पष्ट करें तो आज से लगभग सत्तर–अस्सी वर्ष पूर्व ही स्त्री को केंद्र में रखकर 'ध्रुवस्वामिनी' की सृष्टि करना निश्चय ही अदम्य साहस का कार्य था। पुरुष–प्रधान समाज में प्राचीन काल से ही ऐसा साहित्य सृजित किया गया, जिसमें नायकों का प्रशस्ति–गान मुख्य स्वर था। ऐसी सामाजिक और साहित्यिक परिस्थिति के मध्य जयशंकर प्रसाद ने लीक से हटकर सुप्रसिद्ध नाटक 'ध्रुवस्वामिनी' की रचना की और नाटक का नामकरण नायिका के नाम पर किया। इसके साथ ही नारी समस्या को केंद्र में रखा –

"मैं उपहार में देने की वस्तु, शीतल मणि नहीं हूँ। मुझमें रक्त की लालिमा है मेरा हृदय उष्ण है और उसमें आत्मसम्मान की ज्योति है। उसकी रक्षा मैं ही करूँगी।"[4]

प्रसाद की नारी पात्र 'स्त्री' होकर भी 'अबला' नहीं अपितु क्रांतिकारी है। वह अपने अस्तित्व को जानती है, पहचानती है, तभी तो उसके समक्ष जब भी जटिल परिस्थितियाँ उत्पन्न होती हैं, तो वह उससे घबराती नहीं है, अपने ऊपर किये गये अत्याचार को सहती नहीं रहती अपितु प्रत्युत उससे जूझती है, संघर्ष करती है और उस पर विजय प्राप्त करने का भरपूर प्रयास करती है। 'ध्रुवस्वामिनी' में प्रतिकूल स्थिति को भी अनुकूल बना लेने की अद्भुत क्षमता है। इस प्रकार –

'हिंदी साहित्य में पहली बार ध्रुवस्वामिनी और मंदाकिनी के रूप में नारी समाज की संकीर्ण व्यवस्था को चुनौती देती नज़र आती है।"[5]

'ध्रुवस्वामिनी ' नाटक के आरंभ से ही तत्कालीन राजव्यवस्था की कमजोरियों, उसके संचालन में होने वाले चक्रों–कुचक्रों एवं षड्यंत्रों जैसी समस्याओं पर भी प्रकाश डाला गया है साथ–ही–साथ राष्ट्रीय जागृति और भारतीय संस्कृति के प्रति अगाध श्रद्धा भी प्रकट की गयी है।

निष्कर्ष

अस्तु, 'ध्रुवस्वामिनी' ऐतिहासिक आवरण में लिपटी हुई एक आधुनिकतावादी रचना है, जिसमें नारी की मुक्ति एवं पुनर्विवाह की समस्या का औचित्य प्रस्तुत किया गया है। यह इसकी वर्तमान प्रासंगिकता का आधार भी है ।

संदर्भ सूची

1. ध्रुवस्वामिनीः: जयशंकर प्रसाद – संस्करणः 2011, प्रिन्टेक सिस्टम, पटना, पृष्ठ–24
2. हिंदी नाटक – समाजशास्त्रीय अध्ययनः डॉ० सीताराम झाः संस्करणः 1974, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना, पृष्ठ–194
3. ध्रुवस्वामिनीः: जयशंकर प्रसाद – संस्करणः 2011, प्रिन्टेक सिस्टम, पटना, पृष्ठ–23
4. ध्रुवस्वामिनीः: जयशंकर प्रसाद – संस्करणः 2011, प्रिन्टेक सिस्टम, पटना, पृष्ठ–25
5. प्रसाद का गद्य साहित्यः: डॉ० राजमणि शर्माः संस्करणः 2002, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ–8